सूरत इस्क पैदा होने की

तुमको इस्क उपजावने, करूं सो अब उपाए।
पूर चलाऊं प्रेम को, ज्यों याही में छाक छकाए।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे सुन्दरसाथजी! तुम्हारे अन्दर इश्क पैदा करने के वास्ते अब मैं प्रयत्न करती हूं। प्रेम के ऐसे पूर चलाऊंगी (इतना अधिक प्रेम करूंगी) जिससे तुम्हारी इच्छा पूरी हो जाए। तुम तृप्त हो जाओ।

इस्क जिन विध उपजे, मैं सोई देऊं जिनस।
तब इस्क आया जानियो, जब इन रंग लाग्यो रस।। २ ।।

इश्क जिस तरह से तुम्हारे अन्दर आ जाए वही तरीका अपनाऊंगी, जब तुम्हारे अन्दर परमधाम की रुचि आ जाए तब समझना कि हमारे अन्दर इश्क आ गया है।

ए सुख बिसरे धनीय के, इन सुपन भोममें आए।
सो फेर फेर याद देत हों, जो गया तुमें बिसराए।। ३ ।।

इस स्वप्न की भूमि में धनी के सुख तुम्हें भूल गए हैं और वही मैं तुम्हें बार-बार याद दिलाती हूं।

कीजे याद मिलाप धनी को, और सखियों के सनेह।
रात दिन रंग प्रेम में, विलास किए हैं जेह।। ४ ।।

परमधाम में हम धनी से कैसे मिलते थे, सखियों से कैसे प्रेम करते थे और रात-दिन प्रेम में मगन होकर आनन्द लेते थे। उन्हें याद करो।

निस दिन रंग-मोहोलन में, साथ स्यामाजी स्याम।
याद करो सुख सबों अंगों, जो करते आठों जाम।। ५ ।।

रंग महल में श्री राजश्यामाजी के साथ आठों पहर सब अंगों से सुख लेते थे। उन्हें याद करो।

चौकस कर चित दीजिए, आतम को एह धन।
निमख एक ना छोड़िए, कर मन वाचा करमन।। ६ ।।

यह अपनी आत्मा का धन है। इसे सावधान होकर चित्त में ग्रहण कर लो। वचन और कर्म से इसे एक पल के लिए भी मत छोड़ो।

एही अपनी जागनी, जो याद आवे निज सुख।
इस्क याही सों आवहीं, याही सों होइए सनमुख।। ७ ।।

अपने अखण्ड सुख याद आवें तो अपनी आत्मा जागी समझो, तो इसी से अपने को इश्क आ जाएगा और श्री राजजी के पास चले जाएंगे।

इस्क धनी को आवहीं, याही याद के माहें।
इस्क जोस सुख धनी बिना, और पैदा कहूं नाहें।। ८ ।।

श्री राजजी महाराज के बिना इश्क (जोश) कहीं नहीं मिलता। धनी की याद आने पर ही उनका इश्क मिलता है।

Nijanand App

ताथें पल पल में ढिग होइए, सुख लीजे जोस इस्क।
त्यों त्यों देह दुख उड़सी, संग तज मुनाफक।। ९ ।।

इसलिए प्रति क्षण श्री राजजी महाराज का चितवन करें तथा इश्क और जोश का सुख लें। जैसे-जैसे तुम कपटी लोगों का संग छोड़ोगे, वैसे-वैसे तुम्हारे तन के दुःख समाप्त हो जाएंगे।

जो लों इस्क न आइया, तोलों करो उपाए।
योंही इस्क जोस आवसी, पल में देसी पट उड़ाए।। १० ।।

जब तक इश्क नहीं मिल जाता तब तक उपाय करते रहो। इसी तरह से इश्क और जोश आ जाएगा जो पल भर में तुम्हारी माया का परदा हटा देगा।

पल पल में पट उड़त है, बढ़त बढ़त अनूकरम।
इस्क आए जोस धनी के, उड़ गयो अन्तर भरम।। ११ ।।

पल-पल में श्री राजजी महाराज की जैसे याद आती है, माया का परदा हटता है। जैसे-जैसे धनी का इश्क और जोश धीरे-धीरे बढ़ता है उसी तरह से अन्दर के सब संशय मिटते जाते हैं।

निमख निमख में निरखिए, पट न दीजे पल ल्याए।
छेटी खिन ना पर सके, तब इस्क जोस अंग आए।। १२ ।।

इसलिए हर पल सुरता धनी के चरणों में रखो और एक पल के लिए भी उनसे अलग मत होओ। जब तुम्हारी सुरता एक पल के लिए भी दूर नहीं होगी तब इश्क और जोश अंग में आ जाएंगे।

इस्क पेहेले अनुभवी, निज सरूप निजधाम।
तिन खिन बेर ना होवहीं, धनी लेत असल आराम।। १३ ।।

इश्क से, पहले अपनी परआतम तथा घर का अनुभव होता है। फिर सुरता धनी के चरणों में अखण्ड आनन्द प्राप्त करती है इसमें एक क्षण की भी देरी नहीं होती।

बैठे मूल मेले मिने, धनी आगूं अंग लगाए।
अंग इस्क जी अनुभवी, तुम क्यों न देखो चित ल्याए।। १४ ।।

हम मूल-मिलावे में धनी के सामने अंग से अंग लगाकर बैठे हैं। जिस अंग को इश्क का अनुभव हो जाता है उनकी तरफ क्यों नहीं देखते हो?

ए वचन विलास जो पेड़ के, आए हिरदे आतम के अंग।
तब खिन बेर न लागहीं, असल चित्त एक रंग।। १५ ।।

यह मूल-मिलावा के आनन्द के वचन हैं जो मेरी आत्मा के अंग में समा गए हैं। अब एक क्षण का भी समय नहीं लगेगा, क्योंकि आत्मा और परआतम एक रूप हो गए हैं।

बैठते उठते चलते, सुपन सोवत जाग्रत।
खाते पीते खेलते, सुख लीजे सब बिध इत।। १६ ।।

अब बैठने में, उठने में, चलने में, सोने में, स्वप्न में, जागृत अवस्था में, खाते-पीते समय, खेलते समय, सबके सुख यहां लीजिए।

Nijanand App

एह बल जब तुम किया, तब अलबत बल सुख धाम।
अरस परस जब यों हुआ, तब सुख देवें स्यामा स्याम।। १७ ।।

ऐसा बल जब तुम करोगे तो निश्चित ही तुम्हें अखण्ड परमधाम के सुखों की ताकत मिलेगी। तुम्हारे इस तरह के अरस-परस (पारस्परिक) व्यवहार से श्री राजश्यामाजी तुम्हें अवश्य सुख देंगे।

जिन जानो ढील इस्क की, जब रस आयो अंतस्करन।
तब सुख पाइए धाम के, निस दिन रंग रमन।। १८ ।।

जब परमधाम का ऐसा आनन्द तुम्हें मिलने लगेगा फिर इश्क के आने में देर मत समझो। तब परमधाम के अखण्ड सुख मिलने लगेंगे और रात-दिन आनन्द से खेलने लगेंगे।

फेर फेर सुरत साधिए, धनी चरित्र सुख चैन।
इस्क आए बेर कछू नहीं, खुल जाते निज नैन।। १९ ।।

फिर अपनी सुरता बार-बार धनी की लीला और सुखों में लगाओ। तब इश्क आने में कुछ भी देर नहीं लगेगी और तुम्हारी परआतम जाग जाएगी।

फेर फेर सरूप जो निरखिए, फेर फेर भूखन सिनगार।
फेर फेर मिलावा मूल का, फेर फेर देखो मनुहार।। २० ।।

श्री राजश्यामाजी के स्वरूप को बार-बार देखो बार-बार उनके सिनगार और आभूषणों को देखो। बार-बार मूल-मिलावा को देखो जहां श्री राजजी महाराज तुम्हें खुश करने के लिए बैठे हैं।

फेर फेर देखो धनी हेत की, फेर फेर रंग विलास।
फेर फेर इस्क रस प्रेम की, देखो विनोद कई हांस।। २१ ।।

बार-बार धनी के प्यार की, उनके आनन्द की, मस्ती की, उनके इश्क के रस की, प्रेम की तथा हांस (हंसी) और विनोद की बातों को बार-बार देखो।

अंदर धनी के देखिए, एक चित्त हेत रस रीत।
क्यों कहूं रंग हांस विनोद की, सुख सनेह प्रेम प्रीत।। २२ ।।

एक चित्त होकर धनी के आनन्द और रस रीति को देखो। उनके आनन्द, हंसी, विनोद, सुख, प्यार, स्नेह और प्रीति जैसा वह मोमिनों से करते हैं, वह मैं कैसे बताऊं?

खिन खिन में सुख होएसी, धनी याद किए असल।
ए सुख आए इस्क, बेर ना लगे एक पल।। २३ ।।

धनी के याद करने में प्रतिपल सुख होगा। यह सुख आने से इश्क आएगा। इसमें एक क्षण की भी देर नहीं लगेगी।

मैं जो दई तुमें सिखापन, सो लीजो दिल दे।
महामत कहे ब्रह्मसृष्ट को, सखी जीवन हमारा ए।। २४ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे ब्रह्मसृष्टियो! मैंने जो तुम्हें समझाया है उसे दिल में धारण कर लो। यही हमारे जीवन का लक्ष्य है।

।। प्रकरण ।। ४ ।। चौपाई ।। ३०६ ।।

Nijanand App